(E)ISSN: 2181-1784

सत्यमेव जयते

Indian Coucil for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

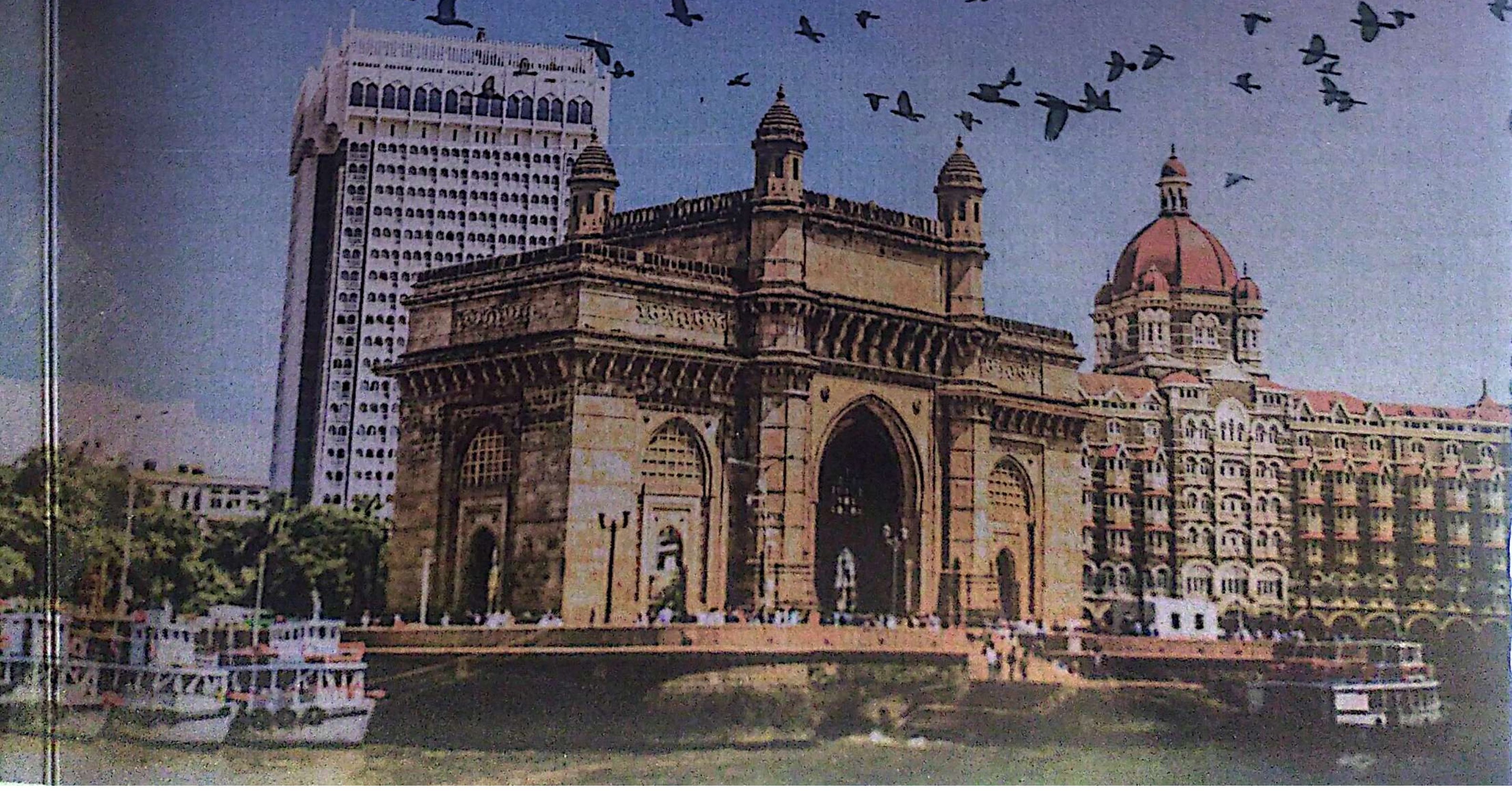

Сканировано с CamScanner

सत्यमेव जयते

Indian Council for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

सौजन्य

लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र
भारतीय दूतावास
5 बुज़ बोजोर सेंट 2 लेन,
ताशकंद, उज्बेकिस्तान

Сканировано с CamScanner

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

संपादक
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा
डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा

ताशकंद 2024

Сканировано с CamScanner

(E)ISSN: 2181-1784

सत्यमेव जयते

Indian Council for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

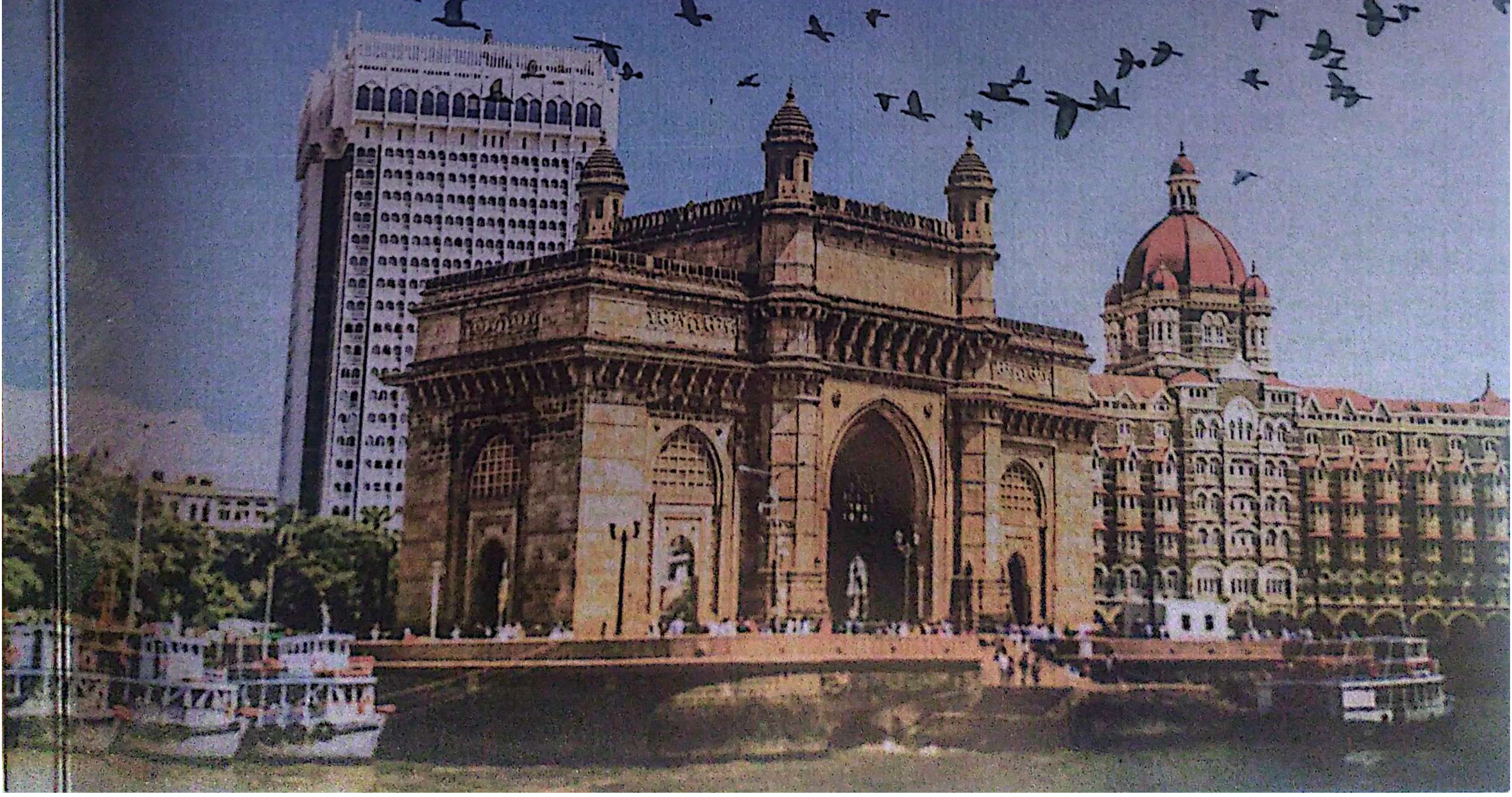

Сканировано с CamScanner

सत्यमेव जयते

Indian Council for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

सौजन्य

लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र
भारतीय दूतावास
5 बुज़ बोजोर सेंट 2 लेन,
ताशकंद, उज्बेकिस्तान

Сканировано с CamScanner

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

संपादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा

ताशकंद 2024

Сканировано с CamScanner

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनुक्रमणिका

1. संपादकीय - डॉ.मनीष कुमार मिश्रा,डॉ.नीलूफ़र खोजाएवा 5-6
2. उज़्बेकिस्तान में हिन्दी -डॉ .गुरमीत सिंह........ 9-11
3. उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों की लोकप्रियता - डॉ .इन्द्रजीत सिंह 12-15
4. उज्बेकिस्तान में भारतीय संस्कृति और हिंदी की गूंज-डॉ .जवाहर कर्नावट 16-19
5. भारत उज़्बेकिस्तान के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंध -नेहा राठी........ 20-27
6. संस्कृत-फ़ारसी का परस्पर भाषायी एवं साहित्यिक संबंध तथा हिन्दी-उज़्बेक पर फ़ारसी का प्रभाव - राजेश सरकार........ 28-41
7. उज्बेकिस्तान में भारत विद्या के विकास का इतिहास- प्रो. उल्फत मुखीबोवा 42-44
8. उज़्बेकी उपन्यासकार अस्कद मुख्तार -डॉ.मनीषकुमार मिश्रा,डॉ.नीलूफ़र खोजाएवा ... 45-51
9. मध्य-एशिया में प्राचीन भारतीय संस्कृति- डॉ .शिल्पा सिंह 52-62
10. उज़्बेकिस्तान में हिंदी दशा और दिशा - डॉ .विजय पाटिल 63-67
11. भारत और उज्बेकिस्तान का संबंध -डॉ.उषा आलोक दुबे 64-67
12. भारत और उज़्बेकिस्तान की भविष्य की मित्रता - सृष्टि प्रिया 68-75
13. उज़्बेकिस्तान भारत के बीच मीडिया क्षेत्र में सहयोग - शाहनाजा ताशतेमीरोवा 76- 77
14. हिन्दी भाषा में वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द (साधारण वाक्यों (simple sentence) के उदाहरण में) - सादिकोवा मौजूदा काबिलोवना 78-82
15. हिन्दी के निपुण विशेषज्ञ : बयात रखमतोव - कमोला अखमेदोवा 83-86
16. विदेशी भाषा सीखने सिखाने में मातृभाषा का प्रभाव –डा.कमोला रहमतजनोवा 87-90
17. उज्बेकिस्तान व भारत की सामाजिक परंपराएँ :समानता की भावना -आस्था शर्मा ... 91-98
18. उज़्बेकी साहित्यिक यात्रा :भारतीय नज़रिया - डॉ .अनुराधा शुक्ला 99-104
19. कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में विविध आयोजनों की भूमिका -निकिता 105-111
20. उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्में - अखमदजान कासीमोव........ 112-114
21. उज़्बेकिस्तान में हिन्दी अध्ययन अध्यापन की समस्याएँ - डॉ.सिराजूद्दीन नुर्मातोव...... 115-117
22. हिन्दी पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन -युनूसोवा आदोलत 118-117
23. उज़्बेकिस्तान के इतिहास में भारतीय मूल निवासी – बयोत रहमतोव........ 118-126
24. "देवियों के व्युत्पत्ति संबंधी विश्लेषण की समस्या पर – सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा - जियाज़ोवा बेरनोरा मंसूरोवना 127-130

Сканировано с CamScanner

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी भाषा अध्ययन - अध्यापन की समस्याएँ

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765681

डॉ सिराजुद्दीन नुर्मातोव

दक्षिणी एशिया की भाषाओं का विभाग,

ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,उज़्बेकिस्तान

विश्व भर में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की समस्या हमारे विचार में अत्यंत महत्वपूर्ण लग रही है, क्योंकि आगामी भविष्य में हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की हेतु एक विशेष रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है। इसी वातावरण में विशेषकर यह बात कहने योग्य है कि विख्यात भारतीय लेखक तथा कवि रघुवीर सहाय ने इसी सिलसिले में ऐसा विचार व्यक्त किया था। "कोशिश होनी चाहिए कि सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक से अधिक जागरूक रहा जाए और वैज्ञानिक तरीके से समाज को समझा जाए। वास्तविकताओं की ओर ऐसा ही दृष्टिकोण रहना चाहिए और यही जीवन को स्वरूप बनाए रख सकता था... मैं ने अपनी कविता के इस चरण तक पहुँचते-पहुँचते शैली में ताल और गति के कुछ प्रयोग किये हैं। ताल को साधारण बोलचाल की ताल के जैसा बनाने में कुछ कविताओं में सफलता मिली थी"। हालाँकि उस कोशिश में कहीं कहीं उर्दू की गति की बंधी हुई शैली का सहारा लेना पड़ा है। भाषा को भी साधारण बोलचाल की भाषा के निकट लाने की कोशिश रही है, मगर इस में कहीं-कहीं भाषा की फिज़ूलखर्ची करनी पड़ी है। बहरहाल इस तरह की कोशिशें विचारवस्तु के दिल और दिमाग में उतरने के तरीके पर निर्भर रहेंगी और ज़रूरी है कि हम अपनी अनुभूति को उसी प्रकार सुधारें, ताकि कविता भी वैसी ही जानदार हो सके, जैसी कि वे वास्तविकताएँ जिनसे हम कविता की प्रेरणा लेते हैं। विचारवस्तु का कविता में खून की तरह दौड़ते रहना कविता को जीवन और शक्ति देना है, और यह तभी संभव है जब हमारी कविता की जड़ें यथार्थ में हों। *(वागर्थ पत्रिका, फरवरी 2014, अंक 223, पृ 7 भारतीय भाषा परिषद्)।*

उल्लेखनीय है कि उज़्बेकिस्तान में भारतविद्या की परम्पराओं का विकास, जो पिछले सत्तर वर्षों से होता आ रहा है मुख्यतः भूतपूर्व सोवियत देश में कार्यरत मास्को और लेनिनग्राद के दो मौलिक भारतविद् स्कूलों की उपलब्धियों और अनुभवों के आधार पर उभर आया था। आज कल हमारे देश में हिन्दी भाषा की उच्चतम शिक्षा का प्रतिनिधित्व करनेवाले हमारे विभाग के अध्येताओं में जिसको आज दक्षिण एशियाई भाषाओं का विभाग कहलाया जाता है उन दोनों स्कूलों के वरिष्ठ डॉ मोस्कालोव और प्रो सेरेब्रयाकोव जैसे प्राध्यापक शिक्षक रहे थे। कारण विभाग की आधुनिक कार्य प्रणाली में उपर्युक्त स्कूलों की परम्पराएँ अभी तक सुरक्षित हैं।

Сканировано с CamScanner

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

गत अवधि के दौरान हमारे यहाँ नवीन भारतीय भाषाओं तथा साहित्य पर विशेषज्ञों की तैयारी के उद्देश्य से बहुत सी पाठ्य पुस्तकें, शब्दकोश और दूसरी पाठ्य सामग्रियाँ संकलित की गई थीं, जिनका उपयोग माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के संस्थानों में हो रहा है और विभाग के सारे सदस्यगण हमारे पूर्वजों और स्वर्गवास गुरुजनों के सृजनात्मक घरोहर को सीखने और दैनिक कार्यों में लाने को अपना सज्जनात्मक कर्तव्य समझते हैं। हम इसी सिलसिले में पाठकों को हमारे प्रयत्नों के कुछ परिणामों से परिचित कराना चाहते हैं।

स्वाधीन उज़्बेकिस्तान के माध्यमिक और उच्चशिक्षा के क्षेत्रों में हो रहे सुधारों के कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए, जिनका लक्ष्य निरंतर शिक्षा का कार्यान्वयन माना जाता है, हिन्दी की अध्यापन प्रणाली को हम तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं। इन में सब से पहले चरण में आम शिक्षा प्रदान करनेवाली पाठशालाएँ हैं जहाँ दूसरी कक्षा से नौवीं कक्षा तक पढ़ाई होती हैं। दूसरे चरण ने तो जिस में दसवीं कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है अकादमिक *lyceums* का नाम ले लिया है और तीसरा चरण हमारे विभाग में दी जानेवाली बी ए और एम ए की शिक्षा के रूप में प्रस्तुत है। इसी संबंध में हमारा उद्देश्य केवल पाठकों को तीनों चरणों की बुनियाद में डाले गये मुख्य सिद्धांतों से अवगत कराने का है।

हमारी समझ में सब से पहले मुख्य सिद्धांत के रूप में उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं की सांस्कृतिक भाषागत तथा *topological* समानता का सिद्धांत परमोचित माना जा सकता है, जो हमारे सदियों पुराने प्रचीन और दीर्घकालीन ऐतिहासिक आपसी संबंधों का परिणाम है। इसी लिये हमारी जनताओं के इतिहास में जर्दूश्ती, सूफी-मत, भक्ति, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम की स्पष्ट रेखाएँ सर्वविदित हैं, जिनके सौजन्य से दोनों जनताओं के लिये अल-बेरूनिय, इब्न सिना, अमीर खुसरो, अलिशेर नवाई, जहरिद्दीन मुहम्मद बबुर, अब्दुलकदिर बेदिल, जेबुनिसा, बयरम खां, अबदुररहीम खने खनान, मिर्जा गालिब और आनकल रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, जुल्फीय, अम्रीता प्रितम जैसे व्यक्तित्व, कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ और सांस्कृतिक तथा कला की हस्तियाँ भी जीता-जागते मिसाल हो सकते हैं।

जहाँ तक भाषागत दृष्टिकोण का सवाल हो, उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं में कई हजार की संख्या में पायी जानेवाली आम शब्दावली के अतिरिक्त, जो सांस्कृतिक शब्दसंम्पदा का एक महत्वपूर्ण भाग सिद्ध है, ध्वनिविचार, व्याकरण और वाक्य-विन्यास के क्षेत्रों में भी बहुत सी समान विशेषताएँ दृष्टिगोचर हैं। इसी कारण दोनों भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण के संकलन के हेतु बहुत ठोस आधार बनाया जा सकता है और इसी के भीतर एक ऐसे आधारभूत तत्त्वों का आविष्कार किया जा सकता है, जो पाठन प्रक्रिया के लिये परम लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिये ध्वनिसमूह में *ज़ (za), क़ (qa), ग़ (g'a), ख़ (ha), फ़ (fa)* जैसे व्यंजन हैं, जो दोनों भाषाओं में अरबी और फारसी प्रभावों के फलस्वरूप प्रविष्ट हुए थे। व्याकरण में तो एसी बहुत सी संयुक्त क्रियाएँ मिल जाती हैं, जो दोनों भाषाओं में लगातार उपलब्ध हैं। फिर संज्ञा शब्दों के विकृत रूप जो विशेष प्रत्ययों के माध्यम से उज़्बेक भाषा में बनते हैं हिन्दी में विभक्तियों या परसर्गों के प्रयोग के अनुकूल हैं। और फिर बिलकुल इसी प्रकार दोनों भाषाओं के वाक्य-विन्यास में शब्दों का प्रमाणित क्रम निर्धारण एक ही पद्धति से स्थापित किया जाता है। इसी क्षेत्र में संयुक्त वाक्यों के निर्माण में भी *"लेकिन", "बल्कि", "कि", "ताकि", "अगर", "अगरची", "या"* जैसे संयोजकों की दोनों भाषाओं में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

इसी सिलसिले में उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं के इतिहास की तुलना अंग्रेज़ी और फ्रेंच के आपसी संबंधों और संपर्कों की ऐतिहासिक प्रक्रिया से की जा सकती है। इसी लिये हमें प्रतीत होता है कि हमारे भारतविद् विशेषज्ञों को अंग्रेज़ी-फ्रेंच तुलनात्मक व्याकरण का अनुभव गंभीरतापूर्वक सीखना चाहिए।

अभी रही बात हिन्दी भाषा के उन विशेष अध्यापनात्मक पद्धतियों की, जो विद्यार्थियों की विभिन्न कुशलताओं और दक्षताओं को विकसित करने के लिये खास तौर पर काम आ सकती है।

पहले पहल व्याकरण संबंधी कुछ ऐसी कुशलताओं का उल्लेख करना जरूरी है, जो बोलचाल और लेखन के अभ्यासों के जरिये से आप से आप इस्तेमाल में मौलिकता या स्थिरता प्राप्त कर सकती है। ऐसी कुशलताएँ संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक मिश्रत प्रणालीवाली जर्मनी और हिन्दी जैसी भाषाओं के अध्यापन के लिये बहुत सकारात्मक सिद्ध हो सकती हैं, जो प्रमाणित रूप से बोलचाल करने और भाषा समझने में ठीक से काम आ सकती हैं।

यह बात भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, विश्लेषणात्मक भाषाओं में वाक्य-विन्यास के उचित नियमों को अपनाने की दक्षताओं के विकास की अलग भूमिका होती हैं।

इस के अतिरिक्त हिन्दी के अध्यापनकार्य में भाषा मध्यम का भी बहुत विशेष महत्व होता है। इसी संबंध में वास्तव में उज़्बेकिस्तान में भाषा मध्यम के रूप में दो भाषाएँ उज़्बेक और रूसी प्रचलित है। इसका मतलब यह है कि, हमारे अधिकांश विद्यार्थी द्विभाषी हैं और यह तथ्य खास तौर पर बहुत उल्लेखनीय है, क्योंकि हिन्दी भाषा की कुछ व्याकरणिक विशेषताओं की तुलना बारी-बारी से उज़्बेक और रूसी भाषाओं से की जा सकती है। उदाहरण के लिये जब वाक्य-विन्यास के अभ्यासों की आवश्यकता पड़ती है तो उज़्बेक भाषा से और जब कभी कारकों के प्रयोग की बात उठती है, तो रूसी व्याकरण से तुलना की जा सकती है।

बिलकुल इसी ही तरह अप्रमाणिक या टकसाली न होनेवाले क्रिया रूपों के भूतकालिक कृदंत के अभ्यासों की ओर जब ध्यान जाता तो रूसी भाषा में प्रचलित व्याकरण में नियमों की सहायता ली जा सकती है। दूसरी ओर से आजकल विश्व भर में अंतरराष्ट्रीय सम्पर्क और संप्रेषण की भाषा में परिणित होनेवाली अंग्रेज़ी के बढ़ते हुए प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, जिसकी प्रबल धारा का प्रभाव हिन्दी की शब्दगत और व्याकरणिक विकास में स्पष्ट रूप से विद्यमान होता जा रहा है - इसी लिये स्कूलों और उच्चशिक्षा संस्थानों में कार्यरत भारतविदों को अंग्रेज़ी व्याकरण और शब्दावली के उचित ज्ञान से सुसज्जित होते हुए भारतीय और अंग्रेज़ी मूर्धन्य ध्वनियों के उच्चारण में जो सूक्ष्म बारीकियाँ पायी जाती है उन पर पूरा काबू पाना चाहिये।

अंत में यह बात भी उचित लग रही है कि वर्तमान उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं के सामाजिक और व्यवहारिक विशेषताओं में भी समानता उत्पन्न हो रही है। उदाहरणार्थ दोनों भाषाएँ हाल ही में स्वाधीन हुए देशों की राष्ट्रभाषाएँ बन चुकी हैं, जिनमें उन्हीं देशों की बहुजातीयता, बहुसांस्कृतिकता और बहुधर्मीयता निहित हैं। अतः दोनों में एक ही साथ विशेष महत्व रखनेवाली भाषा निर्माण की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, जो भाषागत परिस्थिति और भाषागत राजनीति पर निर्भर है। मिसाल के तौर पर नयी तकनीकी प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक परिभाषाओं के निर्माण और प्रमाणीकरण तथा नये शब्दों और परिभाषाओं को बनाने के स्रोतों की खोज, बोलचाल और साहित्य शैलियों के विभेदों से निपटने के उपायों का निर्धारण और स्पष्टीकरण जैसी समस्याएं उठ खड़ी होती है। इन समस्याओं को सुलझाने की विधियाँ हमारे बीच में विचार और अनुभव का आदान-प्रदान और आपसी समृद्धिकरण की परंपराओं को विकसित करने के प्रयत्नों से ही दोनों जनताओं को आपस में लाने और सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में आगे बढ़ाने के हेतु नये-नये फलदायक आयाम खुल सकते हैं।